PCSMANTRA.COM

दर्ज मामले घटे, क्या महिलाएं अधिक सुरक्षित हुईं?

समाचार-संदर्भ: 2026-11-17 | **प्रकाशन:** 17 नवंबर 2026
मुख्य परीक्षा: GS-I: महिला संबंधी मुद्दे; GS-II: शासन
प्रिलिम्स: अवधारणाएं और कथन-आधारित अभ्यास



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

यह भी पढ़ें: महिलाओं की श्रम-भागीदारी: अवैतनिक देखभाल कार्य की दीवार और डेटा की तलाश

खबरों में क्यों

दिल्ली में 2016 से 2025 के बीच दर्ज यौन उत्पीड़न मामलों में गिरावट संबंधी 17 नवंबर की खबर ने महिला सुरक्षा के मूल्यांकन का प्रश्न उठाया है। संबंधित तुलना का पूरा आधिकारिक डेटासेट उपलब्ध हुए बिना उसके प्रतिशत को अंतिम निष्कर्ष मानना उचित नहीं होगा। इससे एक जरूरी अंतर सामने आता है: पुलिस में दर्ज मामलों की संख्या और समाज में वास्तव में हुई घटनाओं की संख्या एक ही चीज नहीं हैं।

अपराध के आंकड़े कैसे पढ़ें?

घटना और पंजीकरण: किसी घटना का होना, उसकी शिकायत करना और उसका अपराध के रूप में पंजीकरण अलग चरण हैं। बेहतर शिकायत-व्यवस्था से दर्ज मामले बढ़ सकते हैं; इसका अर्थ अपने-आप सुरक्षा बिगड़ना नहीं है। उलटे, शिकायत दर्ज कराने में कठिनाई होने पर संख्या कम दिख सकती है।

संख्या और दर: केवल कुल मामले देखने के बजाय संबंधित आबादी और तुलनीय अवधि का ध्यान रखना चाहिए। जनवरी-अक्टूबर की संख्या की पूरे वर्ष से सीधी तुलना नहीं की जा सकती।

कानूनी श्रेणी: भारतीय न्याय संहिता 1 जुलाई 2024 से लागू हुई। लंबे समय की तुलना में पुराने और नए कानूनों की श्रेणियों का मिलान जरूरी है। यौन उत्पीड़न, बलात्कार और बच्चों के विरुद्ध लैंगिक अपराधों को एक ही श्रेणी नहीं माना जाना चाहिए।

आरोपपत्र का अर्थ दोषसिद्धि नहीं

आरोपपत्र दाखिल होना जांच की एक अवस्था है; यह न्यायालय द्वारा अपराध सिद्ध हो जाने का प्रमाण नहीं है। पुलिस की कार्यकुशलता को केवल तेज आरोपपत्र से नहीं, जांच की गुणवत्ता, पीड़ित-सहायता और न्यायिक परिणामों के साथ समझना चाहिए। किसी एक संकेतक का लक्ष्य पूरा होना महिला सुरक्षा का संपूर्ण आकलन नहीं है।

बेहतर मूल्यांकन कैसा हो?

सुलभ शिकायत: शिकायत दर्ज करने में बाधाएं और सहायता तक पहुंच जांची जाए।

सार्वजनिक स्थान: प्रकाश, सुरक्षित परिवहन और स्थान-विशेष की समस्याओं की नियमित समीक्षा हो। कैमरा लगाने की संख्या को उसके उपयोग और जवाबदेही से अलग न देखें।

पारदर्शी डेटा: अपराध-वार, अवधि-वार और परिभाषा-सहित आंकड़े उपलब्ध हों। कम दर्ज मामलों को सफलता बताने से पहले शिकायत के व्यवहार और पंजीकरण में बदलाव का परीक्षण हो।

आगे की राह

महिला सुरक्षा के लिए रोकथाम, शिकायत पर भरोसा, संवेदनशील जांच और समय पर न्याय को साथ देखना होगा। आंकड़े नीति के लिए जरूरी हैं, लेकिन उनकी सही व्याख्या भी उतनी ही जरूरी है। कम पंजीकरण को कम अपराध का पर्याय बनाना नीति को गलत दिशा दे सकता है।

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. अपराध संबंधी प्रशासनिक आंकड़ों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: दर्ज मामलों की संख्या शिकायत और पंजीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित हो सकती है।

कथन 2: आरोपपत्र दाखिल होने का अर्थ दोषसिद्धि हो जाना है।

कथन 3: अलग-अलग कानूनी श्रेणियों वाली समय-श्रृंखलाओं की तुलना से पहले उनका मिलान आवश्यक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या

सही उत्तर: (b)

कथन 1 सही है। पंजीकरण वास्तविक घटनाओं के साथ रिपोर्टिंग प्रक्रिया से भी प्रभावित होता है।

कथन 2 गलत है। दोषसिद्धि न्यायिक निर्णय है।

कथन 3 सही है। परिभाषा बदलने पर आंकड़े सीधे तुलनीय नहीं रह सकते।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

"दर्ज अपराधों में कमी, महिला सुरक्षा में सुधार का पर्याप्त प्रमाण नहीं है।" विवेचना कीजिए। (150 शब्द) (10 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: घटना-पंजीकरण का अंतर

मुख्य भाग में: रिपोर्टिंग की बाधाएं; कानून और अवधि की तुलनीयता

निष्कर्ष में: जांच, पीड़ित-सहायता और न्याय के संयुक्त संकेतक।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

महिला सुरक्षा का आकलन केवल दर्ज मामलों से नहीं हो सकता। शिकायत तक पहुंच, जांच और न्याय के परिणाम भी देखने चाहिए।

क्या कम दर्ज मामले हमेशा कम घटनाएं दर्शाते हैं?

नहीं। शिकायत और पंजीकरण में बदलाव भी संख्या को प्रभावित करते हैं।

क्या आरोपपत्र और दोषसिद्धि समान हैं?

नहीं। आरोपपत्र जांच से संबंधित है; दोषसिद्धि न्यायालय का निर्णय है।

लंबे समय की तुलना में कानून का ध्यान क्यों रखें?

अपराध की परिभाषा या श्रेणी बदलने पर पुराने और नए आंकड़ों का मिलान जरूरी होता है।

स्रोत

- delhipolice.gov.in
- www.indiacode.nic.in

PCS MANTRA.COM